आदिवासी समाज का जीवन-संघर्ष और निर्मला पुतुल की कविताएं

एम.फिल. हिंदी (तुलनात्मक साहित्य) उपाधि हेतु प्रस्तुत
लघु शोध-प्रबंध
सत्र : 2013-2014

शोध निर्देशक

डॉ. उमेश कुमार सिंह
सहायक प्रोफेसर

शोधार्थी

धनंजय प्रताप
पंजी. सं. 2013/04/2005/015

ज्ञान शांति मैत्री

साहित्य विभाग

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
पोस्ट- हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा 442005 (महाराष्ट्र)

अनुक्रम

	पृ.सं.
भूमिका	**01-03**
पहला अध्याय : आदिवासी अर्थ एवं अवधारणा	**04-36**
1.1 आदिवासी समाज और साहित्य	
दूसरा अध्याय – निर्मला पुतुल की कविताओं में जीवन-संघर्ष के विधि आयाम	**37-85**
2.1 अस्मिता का सवाल	
2.2 विकास बनाम विनाश	
2.3 प्रकृति, प्रेम और सौंदर्य	
2.4 नारी मुक्ति के स्वर	
तृतीय अध्याय – सृजनात्मक भाषा और सौंदर्य	**86-89**
उपसंहार	**90-92**
संदर्भ ग्रंथ-सूची	**93-95**

भूमिका

जल, जंगल, जमीन ही आदिवासियों के अस्मिता से जुड़े सवाल नहीं हैं बल्कि धर्म, भाषा और संस्कृति भी आदिवासियों की अस्मिता और अस्तित्व से जुड़े बड़े सवाल हैं। आदिवासी चिंतन में धर्म, भाषा और संस्कृति को केंद्रीय सवाल जब तक नहीं बनाया जाएगा तब तक आदिवासी अस्तित्व और अस्मिता की रक्षा नहीं की जा सकती है।

समकालीन आदिवासी कवयित्री निर्मला पुतुल के काव्य में आदिवासी अस्मिता के सवाल नगाड़े की तरह बज रहे हैं लेकिन अफसोस है कि मुख्यधारा के समाज और साहित्य में यह आवाज अब भी गौड़ है। यह चिंता का विषय है। मेरा लघु शोध-प्रबंध इसी चिंता को जाहिर करने के लिए लिया गया है।

मैंने अपने शोध में निर्मला पुतुल के अब तक प्रकाशित दो काव्य संग्रहों को लिया है। पहला काव्य संग्रह 'अपने घर की तलाश में', दूसरा 'नगाड़े की तरह बजते हैं शब्द'। 'अपने घर की तलाश' कविता संग्रह में 49 कविताएं संकलित हैं और 38 कविताएं 'नगाड़े की तरह बजते हैं शब्द' में संकलित हैं। प्रस्तुत दोनों कविताओं के संग्रह में समकालीन दौर का शायद ही कोई ऐसा प्रसक्त विषय हो जो छूट गया हो। स्त्री, दलित, आदिवासी, विकास, पर्यावरण, भूमंडलीकरण, राजनीतिक हस्तक्षेप, व्यवस्था का खोखलापन सभी कुछ दोनों संकलन की कविताओं में आए हैं और खासियत इस बात में है कि देखने की दृष्टि कवयित्री की निजी और गहरी संवेदना से युक्तहै।

निर्मला पुतुल की कविताओं में आदिवासी समाज की वेदना और वैभव दोनों बहुत मार्मिकता के साथ व्यक्त हुए हैं। मैंने अपने इस लघु शोध कार्य को तीन अध्यायों में विभक्त किया है।

पहला अध्याय 'आदिवासी : अर्थ एवं अवधारणा' है जिसके अंतर्गत एक उपअध्याय 'आदिवासी समाज और साहित्य' है। इस अध्याय में मैंने आदिवासी समाज की पहचान को पुष्ट करने का प्रयास

किया है तथा आदिवासी समाज की प्रासंगिकता और आदिवासी साहित्य की जरूरत क्यों पड़ी? इस विषय पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला है1

दूसरे अध्याय 'निर्मला पुतुल की कविताओं में जीवन-संघर्ष के विविध आयाम'है जिसके अंतर्गत चार अध्याय हैं- 'अस्मिता का सवाल', 'विकास बनाम विनाश', 'प्रकृति, प्रेम और सौंदर्य' एवं 'नारी मुक्ति के स्वर' इस अध्याय में मैंने निर्मला पुतुल की कविताओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया है तथा विस्तृत विवेचन और व्याख्या प्रस्तुत की है।

तीसरा अध्याय 'सृजनात्मक भाषा और उसका सौंदर्य' है जिसके अंतर्गत मैंने निर्मला पुतुल की कविताओं में प्रयुक्त काव्य भाषा का विस्तृत विवेचन और विश्लेषण किया है।

अध्यायों के क्रमवार लेखन के बाद उपसंहार दिया गया है। इसमें शोध विषय की संक्षिप्तएवं संपूर्ण अध्ययन के फलस्वरूप निष्कर्षों को प्रस्तुत किया गया है।

शोध प्रबंध के अंत में संदर्भ ग्रंथ-सूची दी गई है जिसमें इस लघु शोध प्रबंध में प्रयुक्तप्रमुख एवं चुनी हुई सहायक सामग्रियों का भी उल्लेख किया गया है। शोध कार्य के लिए मैंने शोध प्रविधि के रूप में विश्लेषणात्मक पद्धति का प्रयोग करते हुए आवश्यकतानुसार आलोचनात्मक पद्धति का भी उपयोग किया है।

अंत में इस लघु शोध-प्रबंध को पूरा करने में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से जिन लोगों से सहयोग से प्राप्त हुआ है उन सभी लोगों के प्रति अपना आभार व्यक्त करता हूँ। यहाँ सभी का उल्लेख कर पाना मेरे लिए मुश्किल है। किंतु कुछ ऐसे लोग हैं जिनके प्रतियदि मैं आभार व्यक्त न करूँ तो यह मेरी धृष्टता होगी।

सबसे पहले मैं साहित्य विभाग के अध्यक्ष प्र. कृष्ण कुमार सिंह के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने मेरे मन मुताबिक विषय पर शोध करने की अनुमतिप्रदान की। मैं अपने शोध निर्देशक डॉ.

उमेश कुमार सिंह का सदा आभारी रहूँगा जिन्होंने मुझे न सिर्फ शोर्ध कार्य करने के लिए प्रेरित किया बल्कि कई प्रकार की सामग्री उपलब्ध कराई और मुझे लोकतांत्रिक ढंग से कार्य करने का अवसर प्रदान किया है। अपने शोध कार्य हेतु संपूर्ण शोध लेखन को टंकित करने लिए पवन कुमार का विशेष आभारी हूँ।

अंत में मैं अपने जीवन-संघर्ष के प्रेरणा स्रोत भाई, बाबू, भईया और अपने आत्मीय मित्र शिव कुमार रविदास को याद करना जरूरी समझता हूँ।

उपसंहार

आदिवासी समाज वर्तमान समय में सबसे उपेक्षित, उत्पीड़ित और अभावग्रस्त समाज है। यह समाज आज घोर गरीबी, कुपोषण, अशिक्षा, अलगाव, बेरोजगारी, बेदखली, अंधविश्वास और दहशत से जूझते बदहाल जीवन जीने के लिए अभिशप्त हैं। मनुष्य को जीवन जीने के लिए जो मूलभूत सुविधाएं होती हैं वह भी आदिवासियों के पास नहीं हैं।

जल, जंगल, जमीन के सहारे सहस्त्रों सालों से यह समुदाय अपनी भाषा-संस्कृति को संजोए हुए है तथा गाँव देहातों से दूर घने जंगलों, पहाड़ों में जीवनयापन करता आ रहा है। जल, जंगल, जमीन आदिवासियों के अस्तित्व और अस्मिता से जुड़ा हुआ है। तथाकथित विकास के नाम पर

आज वह पहचान आदिवासियों से छीनी जा रही है जिसके सहारे सदियों से वे जिंदा थे। जल, जंगल, जमीन के बिना आदिवासियों की कोई पहचान नहीं है।

अंग्रेजों के आने के बाद शुरू हुई आदिवासी विस्थापन की प्रक्रिया अनवरत रूप से आज भी जारी है। आदिवासियों के विस्थापन के साथ-साथ पारंपरिक समतामूलक आदिवासी समाजों का विघटन भी हुआ है और अभी भी हो रहा है। असमानता शोषण पर आधारित पितृसत्तात्मक समाज उसका स्थान ले रहा है। पिछली शताब्दी के नब्बे के दशक से ये समाज उदारीकरण, भूमंडलीकरण की मार के साथ-साथ सांप्रदायीकरण और ब्राह्मणीकरण की मार भी झेल रहे हैं। आदिवासी स्त्रियों पर यह मार सर्वाधिक पड़ रही है।

आजादी के 67 साल बाद भी हम और हमारी सरकार उन्हें मुख्यधारा में लाने में पूरी तरह से असफल रही है उन्हें बर्बर, जाहिल, पुरातन और असामाजिक मानकर हमें उनसे दूरी बनाकर रखी है। नतीजतन न तो हमें उस समाज के जीवन, परंपराओं, प्रथाओं, संघर्ष, रीति-रिवाज, संस्कार और कला की जानकारी है और न ही हमें उसे जानने की उत्सुकता होती है जबकि अपसंस्कृतिक के इस दौर में मनुष्य जाति के भविष्य के लिए इस समाज में व्याप्त जीवन मूल्यों को मैं जरूरी मानता हूँ।

एक आदर्श समाज की हमारी कल्पना क्या है? एक ऐसा समाज जहाँ समता हो, सामूहिकता हो, सादगी हो, प्रेम और सदाचार हो, जो आत्मनिर्भर समाज हो, जहाँ औरत और मर्द के बीच कम से कम गैर बराबरी हो। यही तो है हमारा आदर्श समाज। ऐसे ही आदर्शात्मक और लोकतांत्रिक समाज व्यवस्था की परिकल्पना समकालीन आदिवासी कवयित्री निर्मला पुतुल भी करती हैं।